Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वैभव लक्ष्मी व्रतीकथा ॥

॥ जय माँ वैभव लक्ष्मी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ शीला के घर आया संकट ॥

यह शुक्रवार व्रत की प्रचलित कथा का मौलिक, संक्षिप्त रूपांतरण है। अलग पुस्तिकाओं में पात्रों और विधि के विवरण बदल सकते हैं।

एक नगर में शीला और उसका पति रहते थे। वे मेहनत से गृहस्थी चलाते और लोगों से प्रेम से मिलते थे। समय बदला तो पति कुछ अनुचित संगति में पड़ गया। जल्दी धन पाने की चाह में उसने काम पर ध्यान घटाया और जुए तथा अन्य व्यसनों में अपनी बचत गँवा दी।

घर का खर्च चलाना कठिन हो गया। पति का व्यवहार भी कठोर हो गया, जिससे शीला को दुःख पहुँचा। एक दोपहर उसके द्वार पर एक वृद्धा आईं। शीला ने साधारण आसन पर बैठाकर उनका आदर किया। वृद्धा ने पूछा कि वह पहले लक्ष्मी मंदिर आती थी, अब क्यों नहीं दिखती।

शीला ने अपने घर की दशा बताई। वृद्धा ने उसे धैर्य दिया और शुक्रवार को वैभव लक्ष्मी माता का व्रत करने की प्रचलित रीति समझाई। उन्होंने कहा कि पूजा में भव्यता नहीं, स्वच्छता, श्रद्धा और संतुलित आचरण आवश्यक हैं।

शीला ने पूछा कि जब घर में सोना-चाँदी का गहना भी नहीं बचा, तब पूजा कैसे करे। वृद्धा ने कहा कि प्रतीक के रूप में उपलब्ध मुद्रा रख सकती हो। शीला ने अपने सामर्थ्य के अनुसार व्रत का संकल्प लिया।

॥ शुक्रवार का संकल्प और पूजा ॥

अगले शुक्रवार शीला ने घर साफ किया। संध्या को माता लक्ष्मी का चित्र और श्रीयंत्र रखकर दीप जलाया। चावल के ऊपर जल से भरा कलश रखा और पास की कटोरी में एक मुद्रा रखी। उसने हल्दी, कुमकुम, अक्षत तथा लाल फूल अर्पित किए।

उसने लक्ष्मीजी के नाम का स्मरण किया, कथा पढ़ी, आरती की और उपलब्ध मीठे प्रसाद का भोग लगाया। कथा के अनुसार पूजा के बाद उसके मन में आशा जगी। उसने पति से भी शांत भाव से बात की और उन्हें फिर से ईमानदार काम की ओर लौटने के लिए कहा।

शुक्रवार दर शुक्रवार शीला ने संकल्प निभाया। लोककथा में कहा जाता है कि पति ने अपने व्यवहार पर विचार किया और व्यसन छोड़कर काम शुरू किया। दोनों ने घर के खर्च को सँभालने और रिश्ते में सम्मान लौटाने का प्रयास किया।

शीला ने जिस संख्या के शुक्रवारों का संकल्प किया था, वे पूरे होने पर माता की विशेष पूजा और उद्यापन किया। उसने सात स्त्रियों को प्रसाद तथा व्रत कथा की पुस्तिका आदर से भेंट की। कुछ रूपों में शृंगार सामग्री देने का वर्णन भी आता है।

Harghar pandit
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कथा का भाव और समापन ॥

कथा में अतिथि वृद्धा को माता लक्ष्मी का करुणामय रूप माना गया है। शीला की आस्था के साथ पति के बदले व्यवहार, नियमित श्रम और परिवार के सहयोग से घर की स्थिति धीरे-धीरे सुधरती है।

वैभव का अर्थ केवल धन नहीं; घर में सम्मान, संयम, सदाचार और संतुलन भी है। कथा अनावश्यक दिखावे से बचकर अपनी क्षमता के अनुसार पूजा करने तथा जरूरत के समय दूसरों का साथ देने की प्रेरणा देती है।

कथा के चमत्कारी प्रसंग धार्मिक आस्था का हिस्सा हैं। व्रत से धन, बीमारी के उपचार या रिश्तों में बदलाव की निश्चित गारंटी नहीं होती। वित्तीय कठिनाई या हिंसा की स्थिति में व्यावहारिक सहायता लेना भी आवश्यक है।

॥ ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"